Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JULY-AUGUST, 2021, VOL- 9/66

जनपद फर्रूखाबाद में जनसंख्या के सामाजिक एवं आर्थिक घटक

संदीप सिंह बर्मन, Ph. D.
भूगोल विभाग हिंदू कॉलेज मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

Paper Received On: 21 JULY 2021
Peer Reviewed On: 31 JULY 2021
Published On: 1 SEPT 2021

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

जनसंख्या अर्थात् जनता का वर्णन एक ऐसा विषय है जिसमें विकास की सीमा को निश्चित किया जा सकता है जिससे भावी विकास में उसका उपयोग सम्भव हो सके। भूगोल में जनसंख्या के वितरण पक्ष का विवरणात्मक और विवेचनात्मक अध्ययन जनसंख्याओं की विभिन्न विशेषताओं को ध्यान में रखकर किया जाता है। यह विशेषताएं जलवायु, भूमि की बनावट, खनिज की उपलब्धता आदि से प्रभावित होती है। इस प्रकार जनसंख्या को मानव भूगोल की एक महत्वपूर्ण शाखा माना जाता है।

अतः जनंसख्या अध्ययन के अन्तर्गत जनसंख्या वृद्धि प्रतिरूप, वितरण, घनत्व, लिंगानुपात, प्रजननता, मर्त्यता, साक्षरता आदि सामाजिक घटकों का अध्ययन किया जाता है।

आर्थिक विकास की दृष्टि से भी जनसंख्या सम्बन्धी आंकड़ों का बहुत अधिक महत्व है क्योंकि जनसंख्या के आंकड़ों के आधार पर ही आर्थिक विकास की प्रवृत्ति व्यवसायिक ढांचा, प्रति व्यक्ति आय, जीवन स्तर, व्यवसायिक प्रतिरूप, कृषि उत्पादन, औद्योगिक उत्पादन, परिवहन एवं संचार आदि आर्थिक विकास के कार्यों के संचालन हेतु अपनाई जाने वाली नीतियों की सफलता के लिए भी जनसंख्या के आंकड़ों की आवश्यकता पड़ती है।

जनसंख्या नीति के अन्तर्गत जनसंख्या की स्थिति तथा उसमें होने वाले परिवर्तनों की माप का अध्ययन एवं विश्लेषण किया जाता है। जैसा कि पूर्व में विवेचना की गयी है। किसी जनसमूह का आकार, उसकी संरचना एवं उसका वितरण जनांकिकी के अध्ययन की विषयवस्तु है। ये सभी तत्व गतिशील हैं तथा इसमें निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। परिवर्तन की दर स्थान, समय एवं समूह के अनुसार बदलती है। जनांकिकी विश्लेषण के अन्तर्गत मुख्य रूप से जनसंख्या वृद्धि, जनसंख्या में होने वाले आर्थिक परिवर्तन, प्रक्षेपण तथा जनसंख्या का विश्लेषण किया जाता है।

अतः निरन्तर आंकड़ों को एकत्र करना, उनका वर्गीकरण, सम्पादन तथा विश्लेषण करना आवश्यक होता है। ये आंकड़ें आंकलन अथवा पंजीकरण से एकत्र किये जाते हैं। सामान्यतः जनांकिकी का अध्ययन एवं विश्लेषण दो प्रमुख रीतियों से किया जाता है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

1. विशिष्ट रीति
2. व्यापक रीति

विश्लेषण की इन दो रीतियों को ही जनांकिकी विश्लेषण की रीतियां कहा जाता है।

विशिष्ट (या सूक्ष्म) जनसंख्या विश्लेषण

जनसंख्या विश्लेषण की इस रीति के अन्तर्गत किसी देश के विशिष्ट समूहों, घटकों तथा उनसे सम्बन्धित समस्याओं एवं घटनाओं का अध्ययन किया जाता है। किसी विशिष्ट क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि की दर, संरचना, उसका वितरण तथा जनसंख्या का एक स्थान से दूसरे स्थान पर आवागमन आदि समस्याओं का अध्ययन एवं विश्लेषण इसके अन्तर्गत किया जाता है। यद्यपि इस विश्लेषण के अन्तर्गत जनसंख्या के आकार एवं संरचना दोनों पक्षों का अध्ययन किया जाता है।

जनसंख्या विश्लेषण में किसी विशिष्ट समूह के जनसंख्या की संरचना का अध्ययन महत्वपूर्ण होता है। संरचना के अध्ययन के लिए जनसमूह की किसी न किसी विशिष्टता को आधार मान लिया जाता है। जैसे आयु, लिंग एवं निवास के आधार पर आयु संरचना लिंग संरचना तथा ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या आदि का वर्गीकरण किया जाता है। ये वर्गीकरण एक निश्चित समय से सम्बन्धित रहते हैं। सूक्ष्म विश्लेषण की सहायता से एक सीमित क्षेत्र की जनसंख्या विशेषताओं का गहनता से अध्ययन करना सम्भव हो जाता है। अनुसंधान की दृष्टि से यह विश्लेषण अत्यन्त उपयोगी है क्योंकि इसकी सहायता से किसी छोटे से क्षेत्र की विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा सकती है तथा विभिन्न क्षेत्रों की जनसंख्या घटनाओं की परस्पर तुलना की जा सकती है।

व्यापक (या समष्टि) जनसंख्या विश्लेषण

व्यापक जनसंख्या विश्लेषण के अन्तर्गत किसी देश के विभिन्न समुदायों एवं क्षेत्रों की जनांकिकीय घटनाओं की अलग–अलग अध्ययन न करके सामूहिक रूप से किया जाता है। इससे विभिन्न देशों की जनांकिकीय स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करने में सहायता मिलती है। यही कारण है कि संयुक्त राष्ट्र संघ ने विश्व के समस्त देशों से जनगणना को एक ही समय से सम्बन्धित करने का आग्रह किया है। किसी देश की जनसंख्या में कैसे परिवर्तन हो रहा है? वहाँ जनसंख्या की वृद्धि दर, जन्म–दर एवं मृत्यु–दर, विवाह की दर क्या है?

इसकी जानकारी समाष्टि विश्लेषण से ही सम्भव है। जीवन तालिका, जनसंख्या पिरामिड, राष्ट्रीय जनसंख्या नीति आदि समष्टिपरक विश्लेषण की विषय–सामग्री है। समष्टिभावी विश्लेषण एक देश का दूसरे के साथ, एक संस्कृति का दूसरे से तथा एक महाद्वीप का दूसरे महाद्वीप के साथ तुलनात्मक अध्ययन करने में सहायक होता है।

जनांकिकीय अध्ययन एवं विश्लेषण में प्रयुक्त होने वाली सूक्ष्म एवं व्यापक दोनों ही पद्धतियाँ आवश्यक उपयोगी समझी जाती हैं। जनसंख्या के अध्ययन के दो पहलू हैं एक स्थानीय अथवा क्षेत्रीय तथा दूसरा सामूहिक व्यापक अथवा समष्टि विश्लेषण सम्पूर्ण देश की जनसंख्या के आकार, संरचना,

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

वितरण एवं परिवर्तनों का चित्र प्रस्तुत करता है। परन्तु यह चित्र एक तरह का औसत मात्र है। इसमें स्थानीय विचलन होता है। जनसंख्या अनेक तत्वों से प्रभावित होता है। अतः समग्र चित्र से स्थिति की सामान्य जानकारी ही प्रापत होती है।

जनपद फर्रूखाबाद की जनांकिकी विश्लेषण का अध्ययन इसलिए और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि जनपद फर्रूखाबाद में जनसंख्या में क्षेत्रीय आसमानता अधिक पायी जाती है। जनपद में जनसंख्या परिवर्तन 1901 से 2001 तक स्पष्ट रूप दृष्टिगोचर होता है तथा नगरीय तथा ग्रामीण क्षेत्रीय वितरण में स्पष्ट परिवर्तन पाया जाता है।

इस तरह जनसंख्या समस्याओं के समाधान एवं आर्थिक एवं जनसंख्या नीतियों के निर्माण की दृष्टि से विश्लेषण की सूक्ष्म एवं व्यापक दोनों ही रीतियों का अध्ययन एवं प्रयोग आवश्यक समझा जाता है।

अतः जनसंख्या विश्लेषण के अन्तर्गत जनपद फर्रूखाबाद की जनसंख्या का विश्लेषण निम्न रूप से किया जा सकता है।

जनसंख्या वृद्धि का विश्लेषण

किसी देश की जनसंख्या वृद्धि का अध्ययन जनांकिकी दृष्टि के साथ–साथ देश की आर्थिक संवृद्धि की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण होता है। जनसंख्या वृद्धि दर को निम्नविधि द्वारा ज्ञात किया जा सकता है।

जनसंख्या वृद्धि की माप की विधि

इस विधि के अन्तर्गत सर्वप्रथम किसी देश की दो समयों पर प्राप्त जनसंख्या के अन्तर की गणना की जाती है उसके उपरान्त इस समयान्तर में जनसंख्या वृद्धि–दर की गणना की जाती है। इस विधि की गणना में प्रयुक्त दोनों समयों की जनसंख्या को या तो जनगणना द्वारा प्राप्त किया जा सकता है या पंजीकरण द्वारा।

माना किसी स्थान विशेष में समय t1 पर कुल जनसंख्या $= Pt_1$

तथा पुनः उसी स्थान पर समय t2 पर कुल जनसंख्या $= Pt_2$

समय अन्तराल (t2-t1) में जनसंख्या वृद्धि $= (Pt_2 - Pt_1)$

जनसंख्या में सापेक्षिक वृद्धि $= \left(\frac{Pt_2 - Pt_1}{Pt_1}\right)$

अथवा $= \left(\frac{Pt_2}{Pt_1} - 1\right)$

जनसंख्या वृद्धि को प्रायः प्रतिशत में व्यक्त किया जाता है।

अतः जनसंख्या में प्रतिशत वृद्धि $= \left(\frac{Pt_2}{Pt_1} - 1\right) \times 100$

चूँकि जनसंख्या में यह प्रतिशत परिवर्तन समय अन्तराल (t_2-t_1) में हुआ है।

अतः जनसंख्या में वार्षिक वृद्धि ज्ञात करने के लिए इसे समय अन्तराल से भाग दे दिया जायेगा।

इस तरह जनसंख्या में वार्षिक वृद्धि दर पर $= \frac{1}{t_2 - t_1}\left(\frac{Pt_2}{Pt_1} - 1\right)\times 100$

अथवा

$$= \frac{1}{t}\left(\frac{Pt_2}{Pt_1} - 1\right)\times 100$$

सूत्रानुसार यदि जनपद में वर्ष 2011 के जनसंख्या वृद्धि पर निकाली जाए तो मान निम्नवत् होंगे।

जहाँ t_2 = 1885204 जनसंख्या वर्ष 2011

t_1 = 1570408 जनसंख्या वर्ष 2001

मान रखने पर

$$= \frac{1885204 - 1570408}{1570408}\times 100$$

= 20.0 प्रतिशत

ग्राफ–1

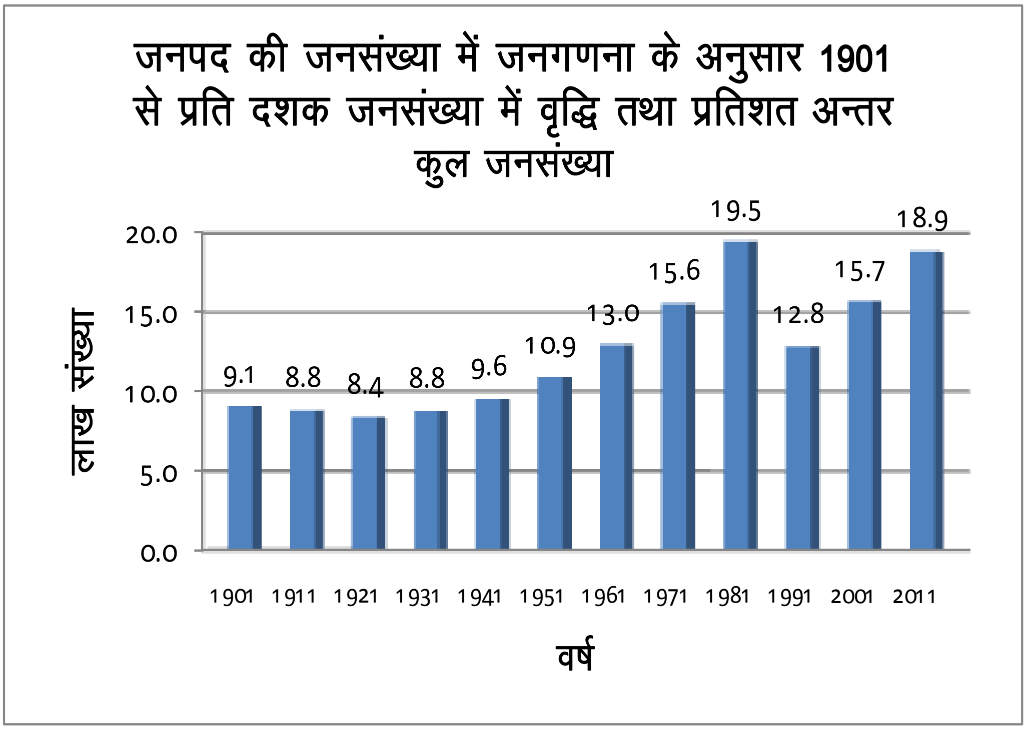

ग्राफ–2

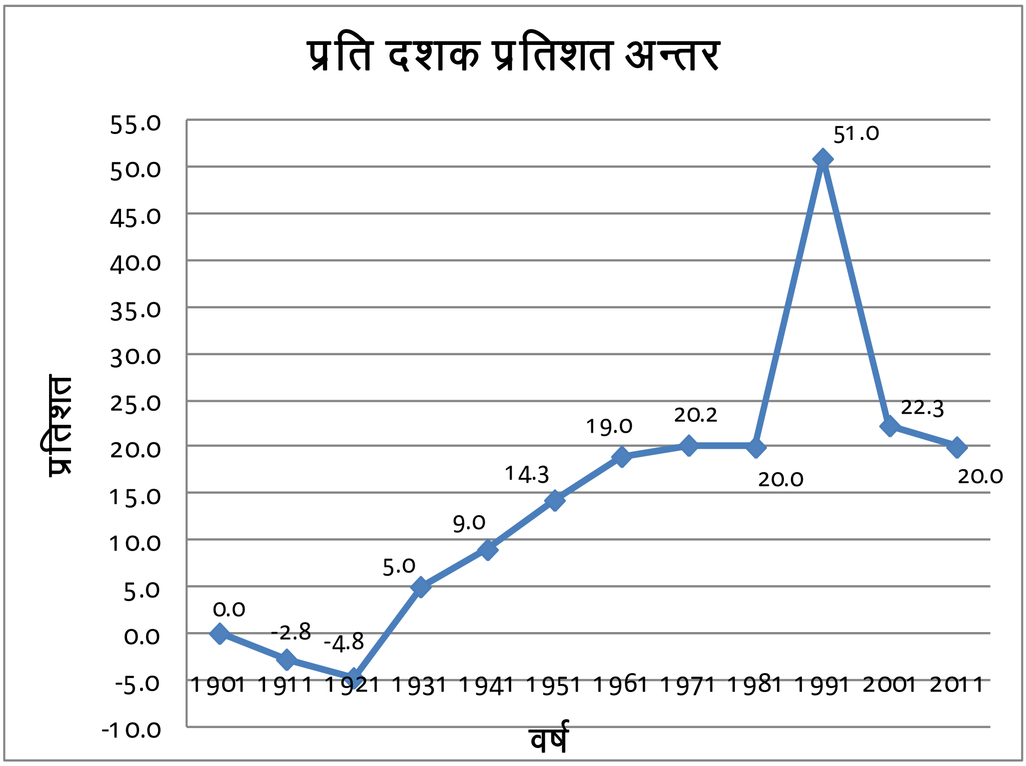

तालिका–4 जनपद फर्रूखाबाद में प्रति दशक जनसंख्या में वृद्धि (1901–2011) तक

दशक	कुल जनसंख्या	जनसंख्या		प्रति दशक प्रतिशत अन्तर		
		ग्रामीण	शहरी	कुल	ग्रामीण	शहरी
1901	908143	782244	125899	0	0	0
1911	882965	767238	115727	-2.8	-2.0	-8.1
1921	840410	739139	101271	-4.8	-3.7	-12.5
1931	878205	763863	114342	5.0	3.0	13.0
1941	955505	830013	125492	9.0	9.0	10.0
1951	1092563	952698	139865	14.3	14.8	11.5
1961	1295071	1151990	143081	19.0	21.0	12.0
1971	1556930	1387028	169902	20.2	20.4	18.7
1981	1949137	1634265	314872	20.0	17.8	85.0
1991	1284419	995032	289387	51.0	22.0	44.0
2001	1570408	1228864	341544	22.3	23.5	18.0
2011	1885067	1468882	416185	20.0	19.5	21.8
औसत (1901-2011)				107.5	87.8	230.8

स्रोत : (गणना उपरोक्त सूत्रानुसार एवम् सांख्यिकीय पत्रिका 1991, 2001 एवम् 2011 से मिलान करते हुए)

जनपद फर्रूखाबाद में वर्ष 1901 से 2011 तक की जनसंख्या वृद्धि की कुल औसत वृद्धि 107.5 प्रतिशत जिसमें ग्रामीण 87.8 तथा शहरी 230.8 प्रतिशत रही है। आंकड़ों से स्पष्ट है कि पिछले सौ वर्षो में शहरी जनसंख्या वृद्धि प्रतिशत कुल वृद्धि प्रतिशत से दोगुना से भी अधिक रहा है जबकि ग्रामीण

जनसंख्या वृद्धि प्रतिशत कुल वृद्धि प्रतिशत का 81.6 अर्थात् 87.8 प्रतिशत रहा है। शहरी प्रतिशत अधिक होने के मुख्य कारण शहरों में चिकित्सा एवं मुख्य सुविधाओं का अधिक विकसित होना है। जबकि गाँवों में आज भी चिकित्सा सुविधाओं की ये आंकड़े पोल खोलते नजर आते हैं। ये आंकड़े गाँव और शहरों के जीवन स्तर को भी दर्शाते हैं क्योंकि जनसंख्या वृद्धि प्रतिशत वहीं ज्यादा होगा जहाँ जीवन स्तर विकसित करने के उपाय होंगे।

आँकड़ों की ओर दृष्टि करें तो पता चलता है 1901 से 1921 तक जनसंख्या वृद्धि प्रतिशत कम हुआ है परन्तु इसका अर्थ ये बिल्कुल भी नहीं इन दशकों में जन्म दर स्थिर रहते हुए मृत्यु दर बढ़ गयी थी यहाँ पर ये बताना जरूरी है इस दशक में जन्म दर में पविर्तन आया परन्तु सम्पूर्ण भारत में बीमारियों के चलते मृत्यु दर अधिक बढ़ गयी थी। वर्ष 1931 में वृद्धि प्रतिशत 5.0 तथा वर्ष 1991 के 51. 0 प्रतिशत क्रमशः सबसे कम और सबसे अधिक रही है।

वर्ष 1971 और 1981 में जनसंख्या वृद्धि प्रतिशत लगभग स्थिर रही है। परन्तु वर्ष 2011 में 20.0 प्रतिशत पृद्धि रही जो कि वर्ष 2001 से (22.3) 2.3 प्रतिशत कम थी।

जनपद फर्रूखाबाद में शहरी जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है। सबसे अधिक शहरी जनसंख्या में वृद्धि वर्ष 1981 में 85.0 प्रतिशत हुई जबकि कुल जनसंख्या वृद्धि पिछले दशक से कुल 5 प्रतिशत वृद्धि हुई और शहरी जनसंख्या में वर्ष 1981 में 85.0 प्रतिशत वृद्धि हुई। इसका कारण कोई प्रमुख कारण नहीं था इस तरह का परिवर्तन कभी–कभी जनसंख्या परिवर्तन में देखा जाता है यहाँ पर कभी–कभी लोग रोजगार की तलाश, अपने निवास स्थान से दूर जाने की चाह, चिकित्सा के लिए, या किसी समय विशेष के प्रलोभन के कारण प्रवास हो जाता है, परन्तु फिर अगले दशक में फिर लोग वापस अपने निवास स्थान आ जाते हैं और ऐसा ही हुआ दशक 1991 में शहरी वृद्धि प्रतिशत घट कर केवल 44.0 प्रतिशत रह गया जबकि कुल जनसंख्या पिछले दशक की कुल वृद्धि प्रतिशत का स्थिर रही और शहर वृद्धि प्रतिशत घट गया।

औसत रूप में कहा जा सकता है कि जनपद की कुल और शहरी जनसंख्या लगातार बढ़ रही है ग्रामीण जनसंख्या घटती जा रही है परन्तु इसी तरह शहरी जनसंख्या बढ़ती रही तो कृषि उत्पादनों की कमी हो जाने के कारण लोगों को खाद्य सम्बन्धी समस्या का सामना करना पड़ सकता है, जिससे सरकार के खाद्य सम्बन्धी उत्पादों को दूसरे देशों से आयात करने पड़ सकते हैं और महंगाई का सामना करना पड़ सकता है। इस तरह की समस्या किसी भी विकासशील देश के भयानक हो सकती है।

अतः बढ़ती जनसंख्या जिसमें ग्रामीण अनुपात घटता हो और शहरी अनुपात बढ़ता रहा हो विकास में बाधक हो सकता है। सरकार को चाहिए लोग की गाँवों में रोकने के उपाय करें।

जनसंख्या का स्थानिक वितरण से आशय

जनसंख्या वितरण भूगोल का एक आधारभूत पक्ष है। इसका प्रमुख कारण यह है कि किसी क्षेत्र में जनसंख्या के वितरण से जनसंख्या की अन्य विशेषताएं जुड़ी होती हैं। जनसंख्या भूगोल में जनसंख्या

के विश्लेषणात्मक अध्ययन के लिये जनसंख्या वितरण प्राथमिक महत्व रखत है, क्योंकि एक ओर तो जनसंख्या वितरण स्थल से सम्बन्ध रखता है तो दूसरी ओर यह जनसंख्या की अन्य विशेषताओं से सम्बन्धित है। संयुक्त राष्ट्र के बहुभाषीय जनांकिकी शब्द कोष में जनसंख्या वितरण शब्द की व्याख्या निम्न शब्द में की गयी है।

''प्रत्येक जनसंख्या किसी दिये गये क्षेत्र में निवास करती है तथा जनसंख्या के भौगोलिक या स्थानिक वितरण का अध्ययन उस तरीके को प्रदर्शित करता है जिसके अन्तर्गत मानव उस दिये गये क्षेत्र में वितरित होता है।''

जनसंख्या भूगोल जनसंख्या के स्थानिक वितरणों तथा उसकी विभिन्नताओं से घनिष्ट रूप से जुड़ा हुआ हे। अतः भूगोलवेताओं का यह प्रथम कर्तव्य है कि वह यह देखे कि विभिन्न क्षेत्रों में जनसंख्या का वितरण किस प्रकार का है तथा जनसंख्या के इस वितरण प्रतिरूप में कौन–कौन से कारण उत्तरदायी है। साथ ही भूतकाल से वर्तमान समय तक जनसंख्या वितरण प्रतिरूप में क्या क्या परिवर्तन हुये? तथा यह परिवर्तन क्यों हुए? इन सभी प्रश्नों का उत्तर जनसंख्या भूगोल अथवा जनांकिकीय भूगोल में दिया जाता है।

जनसंख्या वितरण का महत्व

जनसंख्या वितरण के अध्ययन का महत्व इसलिए अधिक है क्योंकि किसी देश की जनसंख्या के राष्ट्रीय औसत जनसंख्या की सही तस्वीर प्रस्तुत नहीं करते। किसी देश के राष्ट्रीय औसत का उसके विभिन्न भागों के औसत से इतना अधिक विचलन मिलता है कि राष्ट्रीय औसत का अपना कोई महत्व नहीं रहता। ऐसी स्थिति में देश के विभिन्न भागों या प्रदेशों में मिलने वाले जनसंख्या औसतों के वितरण का अध्ययन आवश्यक हो जाता है।

भूपटल पर जनसंख्या का वितरण प्रतिरूप सदैव परिवर्तनशील रहता है। किसी भूभाग में जनसंख्या के वितरण प्रतिरूप में परिवर्तन का होना उस भू–भाग की आर्थिक क्रियाओं के महत्व से घनिष्ट रूप से जुड़ा होता है। यदि किसी भू–भाग की अर्थव्यवस्था प्राचीन कृषि तथा चलवासी पशुपालन जैसे प्राथमिक व्यवसायों पर मुख्य रूप से निर्भर करती है तो यह अर्थव्यवस्था कम जनसंख्या के भरणपोषण की क्षमता रखती है जबकि दूसरी ओर यदि किसी भू–भाग की अर्थव्यवस्था में विकसित उद्योग तथा व्यापार की प्रमुखता है तो वह अर्थव्यवस्था अपेक्षाकृत अधिक जनसंख्या के भरण पोषण की क्षमता रखेगी। जनसंख्या वितरण प्रतिरूप का अनुमान सघन बसे कम, बसे क्षेत्रों से लगाया जा सकता है। साथ ही ऐसे क्षेत्रों में जनसंख्या वितरण के विभिन्न प्रतिरूपों के लिए उत्तरदायी कारकों की समीक्षा की जा सकती है।

यदि किसी देश की जनसंख्या के वितरण का उस देश के प्राकृतिक संसाधनों व व्यवसायों में सन्तोषजनक, सम्बन्ध स्थापित होता है तो वहाँ की जनसंख्या अपेक्षाकृत खुशहाल स्थिति में होती है। लेकिन प्रायः ऐसा होता नहीं है। कुछ क्षेत्र में जनसंख्या का जमाव वहाँ के प्राकृतिक संसाधनों तथा

व्यवसायों की तुलना में अधिक होता है ऐसे क्षेत्र में रहने वाली जनसंख्या का जीवन स्तर निम्न होता है।

दूसरी ओर कुछ क्षेत्रों में जनसंख्या का जमाव वहाँ के प्राकृतिक संसाधनों तथा व्यवसायों की तुलना में कम होता है। ऐसे क्षेत्रों में रहने वाली जनसंख्या का जीवन स्तर उच्च होता है। अधिकतम सामाजिक कल्याण के उद्देश्य से यह आवश्यक है कि राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक ऐसी जनसंख्या वितरण नीति लागू कि जारी की जनसंख्या उक्त विसंगतियों को यथासम्भव दूर किया जाए तथा प्रत्येक क्षेत्र की आर्थिक क्षमता के अनुसार ही जनसंख्या को उस क्षेत्र में रहने के अवसर प्रदान किये जाए।

जनसंख्या वितरण एक सूक्ष्म जनांकिकी विश्लेषण है जिसका प्रमुख उद्देश्य क्षेत्रीय विषमताओं को ज्ञात करना तथा उनके कारणों तथा परिणाम को जानना होता है।

हाऊजर तथा डन्कन महोदय ने जनांकिकी वितरण की विषय वस्तु पर टिप्पणी करते हुये लिखा है।

किसी राष्ट्र या समुदाय की जनसंख्या का उसके क्षेत्रीय उपविभागों जैसे प्रदेश, राज्य, सामाजिक–आर्थिक क्षेत्र, नगरीय आवास तथा जनगणना क्षेत्रों के रूप में अध्ययन करना जनांकिकी वितरण का प्रमुख विषय क्षेत्र है। एक और इसमें किसी क्षेत्र के समस्त निवासियों का अध्ययन किया जाता है तो दूसरी ओर इस क्षेत्र के छोटे–छोटे उपविभागों में जनांकिकी की संरचना का अध्ययन भी होता है।

मृत्युक्रम

जैविकीय दृष्टिकोण से मृत्यु का आशय उस मानव शरीर का निष्प्राण होना है जिसका जीवित जन्म हुआ था, परन्तु जनांकिकी दृष्टिकोण से मृत्यु जनसंख्या के आकार में होने वाली कमी को प्रदर्शित करती है। यदि किसी जनसंख्या की मृत्यु दर निम्न है तो उस जनसंख्या में प्रौढ़ावस्था व वृद्धावस्था वर्ग का प्रतिशत उस जनसंख्या से अधिक होता है जिसकी दरें उच्च रहती हैं।

देशान्तरण या प्रवास

साधारणतः देशान्तरण से आशय जनसंख्या का अपने स्वाभाविक निवास से अलग रहना होता है जिन देशों व क्षेत्रों में जनसंख्या का अधिक दबाव होता है उन क्षेत्रों से जनसंख्या के कम दबाव वाले क्षेत्रों की ओर जनसंख्या का प्रवास होता है। वृद्धावस्था व बाल्यावस्था आयु वर्ग की तुलना में कार्यशील आयु वर्ग (15 वर्ष से 45 वर्ष) के लोगों अधिक संख्या में प्रवास होता हे जिसके फलस्वरूप जिन क्षेत्रों में कार्यशील आयु वर्ग का प्रतिशत कम हो जाता है। जबकि जिन क्षेत्रों में प्रवास होता है, उन क्षेत्रों में कार्यशील आयु वर्गों प्रतिशत बढ़ जाता है। इस प्रकार प्रवास की प्रक्रिया से किसी दी गई समयावधि से किसी देश को आयु संरचना में परिवर्तन होना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। जनपद का प्रवास रोजगार

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

की तलाश व कृषि न होने पर समीप के जिलों (मेरठ, बरेली, अलीगढ़, आगरा, रामपुर, मुरादाबाद, यहाँ तक दिल्ली, गाजियाबाद) तक होता है। ये दैनिक व अस्थायी दोनों प्रकार का होता है।

जनपद में जनसंख्या का स्थानिक वितरण

जनपद फर्रूखाबाद का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 2181.00 वर्ग कि०मी० जिसमें ग्रामीण क्षेत्रफल 2138.18 वर्ग कि०मी० तथा शहरी 42.84 वर्ग कि०मी० है। इस कुल भौगोलिक क्षेत्रफल पर यदि हम अवलोकन करें वर्ष 1991 में कुल जनसंख्या 1284419 थी जिसमें 995032 ग्रामीण तथा 289387 शहरी जनसंख्या निवास करती थी जो बढ़कर वर्ष 2001 में कुल जनसंख्या 1570408 हो गयी जिसमें 1228864 ग्रामीण तथा 341544 शहरी जनसंख्या निवास करती थी यही जनसंख्या वर्ष 2011 की जनगणना में बढ़कर 1885067 हो गयी जिसमें 1468882 ग्रामीण तथा 416185 शहरी जनसंख्या निवास करती है। इस प्रकार निष्कर्ष निकलता है कि जनगणना वर्ष 1991 से 2011 तक कुल भौगोलिक क्षेत्रफल पर (2181.00 वर्ग कि०मी०) 46.8 प्रतिशत जनसंख्या की वृद्धि हुई है।

अब यदि विगत् 30 वर्षों में 46.8 प्रतिशत जनसंख्या की वृद्धि हुई है तब समझा जा सकता है कि सीमित क्षेत्रफल पर किस प्रकार का प्रभाव पड़ेगा जिसका आंकलन हम छठे अध्याय में करेंगे।

भौगोलिक क्षेत्रफल की दृष्टि से जनपद का मोहम्मदाबाद विकास खण्ड सबसे बड़ा विकास खण्ड है परन्तु जनसंख्या की दृष्टि से दूसरे स्थान पर आता है। विकास खण्ड मोहम्मदाबाद में वर्ष 2011 में जनसंख्या 259259 है जबकि वर्ष 2001 में 233188 तथा वर्ष 1991 में 187873 जनसंख्या थी। इसी प्रकार सबसे कम क्षेत्रफल 142.15 वर्ग कि०मी० वाले बढ़पुर विकास खण्ड में 153202 जनसंख्या वष 2011 में थी जबकि वर्ष 1991 में 95337 तथा वर्ष 133249 जनसंख्या रह रही है। यदि सभी विकास खण्डों को जनसंख्या के अनुसार क्रम दिया जाय तो प्रथम स्थान पर विकास खण्ड कमालगंज द्वितीय स्थान मोहम्मदाबाद, तृतीय स्थान पर कायमगंज, चतुर्थ स्थान पर शमसाबाद, पंचम स्थान पर राजेपुर, छठवे स्थान पर नवाबगंज तथा अंतिम सातवें स्थान पर बढ़पुर विकास खण्ड का स्थान है और यही स्थान वर्ष 1991 तथा 2001 में भी जनसंख्या अनुसार स्थित रहा है।

स्थानिक वितरण में यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखें तो पता चलता है कि शहरी जनसंख्या का अनुपात तेजी से बढ़ रही है जबकि क्षेत्रफल केवल 42.84 वर्ग कि०मी० है जो कि कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 1. 97 प्रतिशत लगभग 2 प्रतिशत है।

निष्कर्षानुसार 02 प्रतिशत क्षेत्रफल पर 22 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। जबकि ग्रामीण क्षेत्रफल 2138 वर्ग कि०मी० अर्थात् 98 प्रतिशत क्षेत्रफल जिस पर 77.9 प्रतिशत अर्थात् लगभग 78 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। हैरान करने वाले तथ्य ये हैं बढ़ती हुई जनसंख्या को रोकने के ग्रामीण क्षेत्र को शहरी सुख सुविधाओं देकर शहरी क्षेत्र में बदलने के उपाय सरकार की ओर बिल्कुल भी नहीं किये गये हैं। यदि ग्रामीण क्षेत्र को सुख सुविधा देकर धीरे–धीरे शहरी क्षेत्र में बदला जा सकता था।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

ग्राफ–3

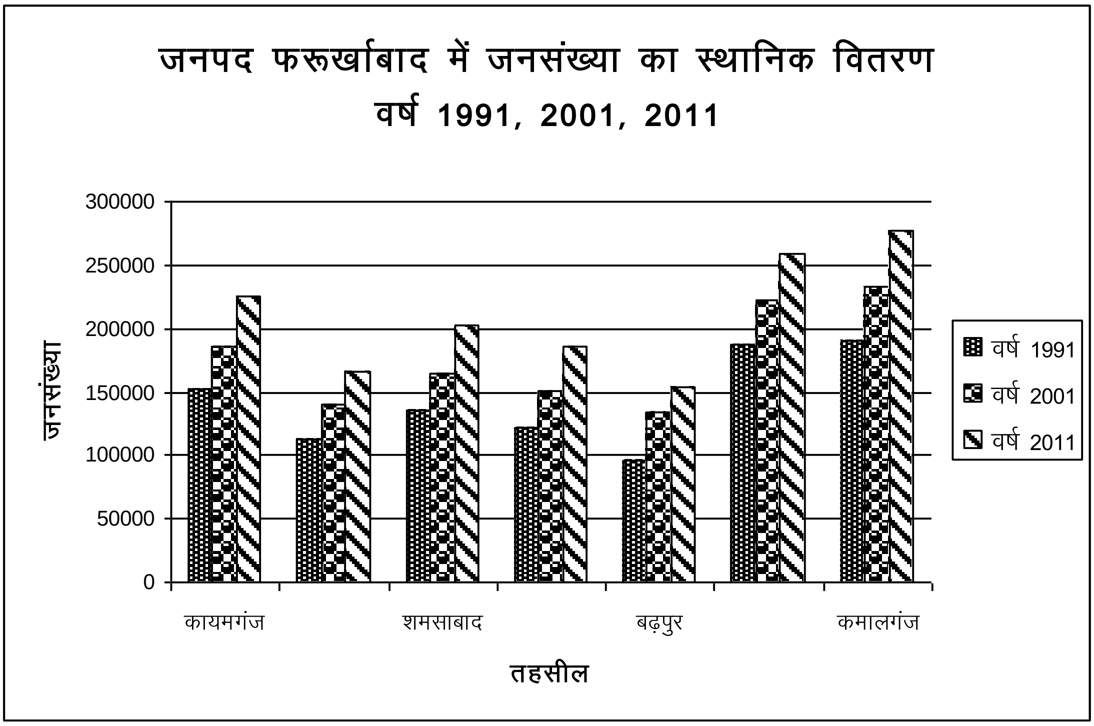

तालिका–5 जनपद फर्रूखाबाद में जनसंख्या का स्थानिक वितरण–1991, 2001, 2011

विकास खण्ड	क्षेत्रफल वर्ग कि०मी०	वर्ष 1991	वर्ष 2001	वर्ष 2011
1. कायमगंज	377.39	152459	185966	225078
2. नवाबगंज	242.34	112099	139371	165555
3. शमसाबाद	342.36	135414	163895	202299
4. राजेपुर	349.98	121090	150988	186183
5. बढ़पुर	142.15	95337	133249	153202
6. मोहम्मदाबाद	403.86	187873	222207	259259
7. कमालगंज	322.86	190760	233188	277306
योग समस्त विकास खण्ड	**2181.00**	**1284419**	**1570408**	**1885067**
योग ग्रामीण	**2138.18**	**995032**	**1228864**	**1468882**
योग शहरी	**42.84**	**289387**	**341544**	**416185**

स्रोत : *सांख्यिकी पत्रिका–1991, 2001, 2011 के अनुसार।*

जनपद फर्रूखाबाद में धर्मानुसार जनसंख्या का स्थानिक वितरण–1991, 2001, 2011

किसी भी राष्ट्र या प्रदेश के जनसंख्या का स्थानिक धर्मानुसार वितरण का अध्ययन भारत जैसे देश जहाँ अनेक धर्म पाये जाते हैं। भारत को अनेक धर्मों का देश भी कहा जाता है। वहाँ धर्मानुसार वितरण अति महत्वपूर्ण है। जनपद फर्रूखाबाद हिन्दू बाहूल क्षेत्र है। जनपद फर्रूखाबाद में हिन्दू जनंसख्या वर्ष 1991 में 2087716 वर्ष 2001 में 1326118 तथा 2011 में 1609823 है जब मुस्लिम जनसंख्या वर्ष 1991 में 345786, वर्ष 2001 में 232599 तथा वर्ष 2011 में 261184 है। तीसरे स्थान पर सिक्ख जनसंख्या है वर्ष 1991 में 2198, वर्ष 2001 में 3111 तथा वर्ष 2011 में 3921 है। चौथे स्थान पर बौद्ध को वर्ष 1991 में 1888 परन्तु वर्ष 2001 तथा 2011 में क्रमशः जनसंख्या 4983 तथा 5896 हो गयी

इस कारण तीसरे स्थान पर आ गयी और वर्ष 2001 तथा 2011 में सिक्ख चौथे स्थान पर आ गयी। उसके बाद पाँचवे स्थान पर जनपद के इसाई जनसंख्या आती है वर्ष 1991 में केवल 1480, वर्ष 2001 में 2256 तथा वर्ष 2011 में 3400 ही जनसंख्या थी। जनपद फर्रूखाबाद में छठवें स्थान पर हमेशा की तरह वर्ष 1991 में 952, वर्ष 605 तथा वर्ष 843 जनसंख्या ही रही है।

ग्राफ–4

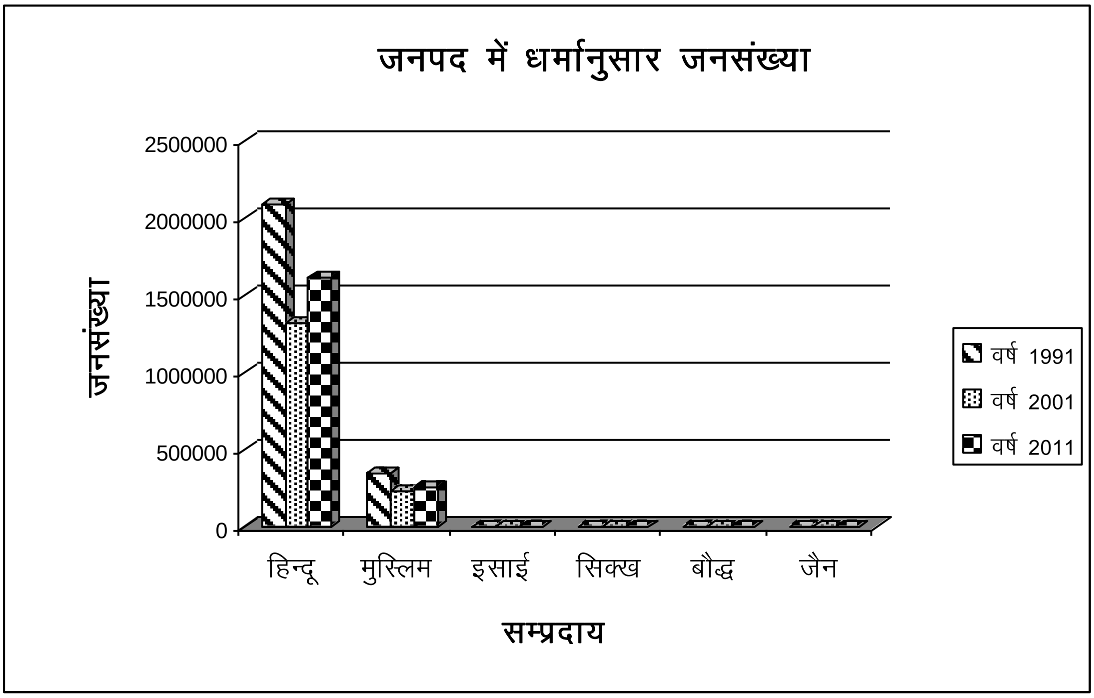

तालिका–6 जनपद में धर्मानुसार जनसंख्या–1991, 2001, 2011

प्रमुख धार्मिक सम्प्रदाय	कुल जनसंख्या		
	वर्ष 1991	वर्ष 2001	वर्ष 2011
1. हिन्दू	2087716	1326118	1609823
2. मुस्लिम	345786	232599	261184
3. इसाई	1480	2256	3400
4. सिक्ख	2198	3111	3921
5. बौद्ध	1888	4983	5896
6. जैन	952	605	843
योग	**1284419**	**1570408**	**1885067**

स्रोत : *सांख्यिकी पत्रिका–1991, 2001, 2011 के अनुसार।*

जनपद में जनसंख्या घनत्व

जनसंख्या घनत्व प्रति वर्ग कि०मी० क्षेत्रफल में निवास कर रहे व्यक्तियों की संख्या को प्रदर्शित करता है। दूसरे शब्दों में जनसंख्या घनत्व मानव भूमि का एक अनुपात है। अतः किसी प्रकार के क्षेत्रफल तथा जनसंख्या में जो पारस्परिक अनुपात होता है उसे जनसंख्या घनत्व कहा जाता है। किसी प्रदेश का जनसंख्या घनत्व इस तथ्य को भी प्रदर्शित करता है कि उस प्रदेश में उपलब्ध संसाधनों का

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उपभोग कितने व्यक्तियों द्वारा किया जा रहा है। साथ ही जनसंख्या घनत्व द्वारा भूमि पर मानव के वितरण के अध्ययन में सहायता मिलती है जिससे ये पता चलता है किसी प्रदेश या क्षेत्र विशेष का जन वितरण कैसा तथा किस प्रकार का है। इस वितरण से उस प्रदेश या क्षेत्र की भूमि स्वरूप को समझने में सहायता मिलती है।

जनपद फर्रूखाबाद में कुल जनपदीय जनसंख्या घनत्व वर्ष 2011 में 864 है। ये जनसंख्या घनत्व वर्ष 1991 में 588 तथा वर्ष 2001 में 720 प्रति वर्ग कि०मी० था अर्थात् वर्ष 1991 से 2011 तीन दशकों में 588 से 864 यानि 276 की वृद्धि हुई है। इसी प्रकार ग्रामीण जनसंख्या घनत्व के अन्तर्गत वर्ष 1991 में 465, वर्ष 2001 में 574 तथा वर्ष 2011 में 687 प्रति वर्ग कि०मी० है। शहरी जनसंख्या घनत्व के अन्तर्गत वर्ष 1991 में 6729, वर्ष 2001 में 7942 तथा वर्ष 2011 में 9678 प्रति वर्ग कि०मी० है। ग्रामीण जनसंख्या घनत्व के वर्ष 2011 के अन्तर्गत सबसे अधिक विकास खण्ड बढ़पर में 1078 प्रति वर्ग कि०मी० है जबकि सबसे कम जनसंख्या घनत्व विकास खण्ड राजेपुर में 532 प्रति वर्ग कि०मी० है। यही क्रम वर्ष 2001 में भी था और वर्ष 1991 में भी यही क्रम था। यदि हम जनपद फर्रूखाबाद में सातों विकास खण्डों को दशक 1991 से 2011 तक देखे तो इन वर्षों में लगातार जनसंख्या घनत्व बढ़ रहा है। बढ़ती हुई जनसंख्या घटते हुए संसाधनों के काफी नहीं है। बढ़ता हुआ घनत्व जनसंख्या की बढ़ती हुई जरूरते हैं जिनको संतुलित करना अनिवार्य है।

ग्रामीण घनत्व बढ़ने का तात्पर्य कृषि पर जनघनत्व बढ़ना है परन्तु शहरी घनत्व बढ़ने के अर्थ कृषि उत्पादों की कमी अर्थात् लोग कृषि कार्य से अलग हो रहे हैं। शहरी जन घनत्व का अध्ययन अति महत्वपूर्ण है ये जानने के लिए की शहरी धरती पर जनसंख्या का बोझ कितना बढ़ा है क्योंकि जैसे–जैसे शहरी जन घनत्व बढ़ेगा वैसे–वैसे लोग कृषि से दूर होते जाते हैं और बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए लोगों का कृषि कार्य में लगा रहना आवश्यक है।

जनपद में शहरी जन घनत्व सबसे अधिक कैमगंज (एम०बी०) में 17192 प्रति वर्ग कि०मी० है। सबसे कम जन घनत्व महोम्मदाबाद में 2468 प्रति वर्ग कि०मी० है। शहरी जन घनत्व के अन्तर्गत वर्ष 1991 में 6729, वर्ष 2001 में 7942 तथा वर्ष 2011 में 9678 प्रति वर्ग कि०मी० है, वर्ष 2011 में अमेठी जदीद (सी०टी०) तथा बरांव (सी०टी०) क्षेत्र जोड़े गये हैं जिनका जन घनत्व क्रमशः 5642 तथा 5886 प्रति वर्ग कि०मी० है। वर्ष 1991 से 2011 तक 2949 प्रति वर्ग कि०मी० की वृद्धि हुई है।

तालिका–7 जनपद फर्रूखाबाद का नगरीय जनसंख्या घनत्व

नगर का नाम	नगरीय जनसंख्या घनत्व		
	वर्ष 1991	वर्ष 2001	वर्ष 2011
1. कैमगंज (एम०बी०)	13378	15575	17192
2. शम्साबाद (टी०ए०)	4872	5899	7113
3. कमल्गंज (टी०ए०)	3701	4881	5159
4. फर्रूखाबाद (फतेहगढ़)	9265	12017	14556
5. फर्रूखाबाद (छावनी)	3540	3666	3698
6. कम्पिल (टी०ए०)	6760	8557	10281
7. महोम्मादाबाद	919	2060	2468
8. अमेठी जदीद (सी०टी०)	00	00	5642
9. बरांव (सी०टी०)	00	00	5886
योग नगरीय	**6729**	**7942**	**9678**

स्रोत : *सांख्यिकी पत्रिका–1991, 2001, 2011 के अनुसार।*

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

ग्राफ–5

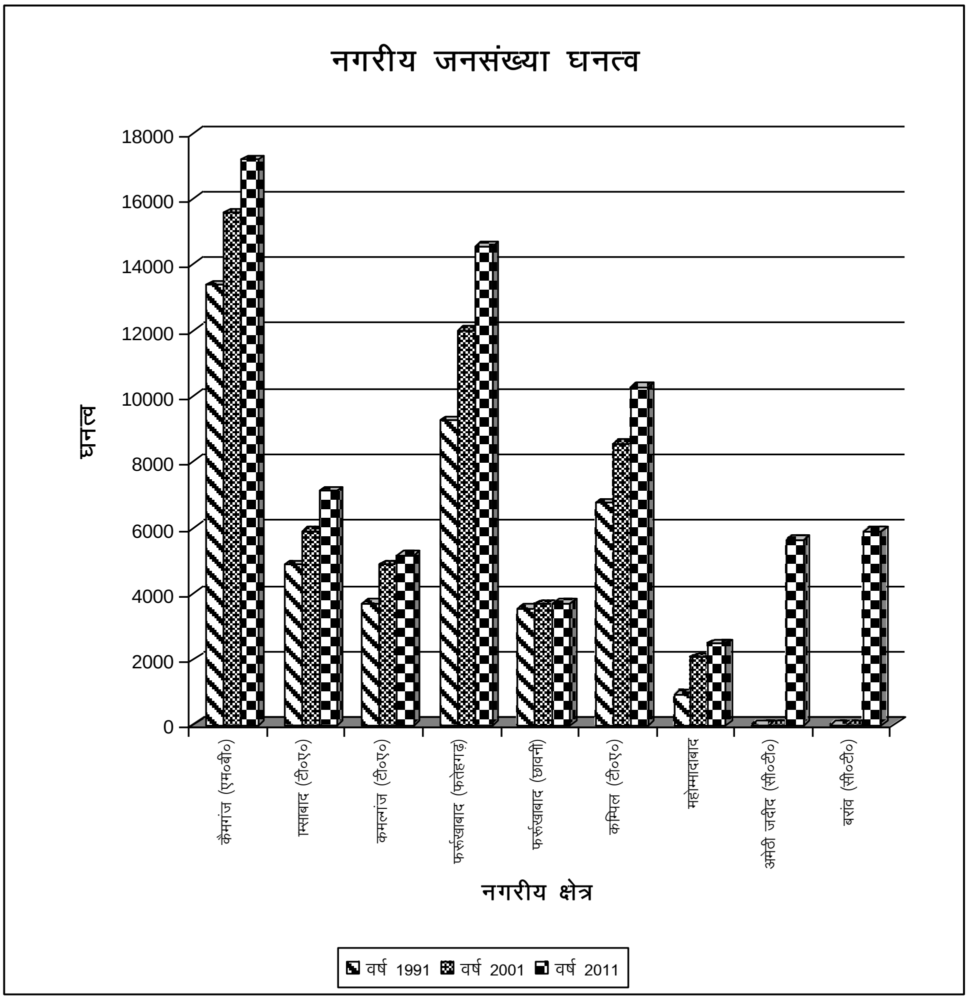

तालिका–8 जनपद फर्रूखाबाद में ग्रामीण जनसंख्या का घनत्व–1991, 2001, 2011

विकास खण्ड	ग्रामीण जनसंख्या घनत्व		
	वर्ष 1991	वर्ष 2001	वर्ष 2011
1. कायमगंज	303	493	596
2. नवाबगंज	488	575	683
3. शमसाबाद	387	479	591
4. राजेपुर	378	431	532
5. बढ़पुर	691	937	1078
6. मोहम्मदाबाद	486	550	642
7. कमालगंज	554	722	859
योग जनपद	**588**	**720**	**864**
योग ग्रामीण	**465**	**574**	**687**
योग शहरी	**6729**	**7942**	**9678**

स्रोत : *सांख्यिकी पत्रिका–1991, 2001, 2011 के अनुसार।*

ग्राफ–6

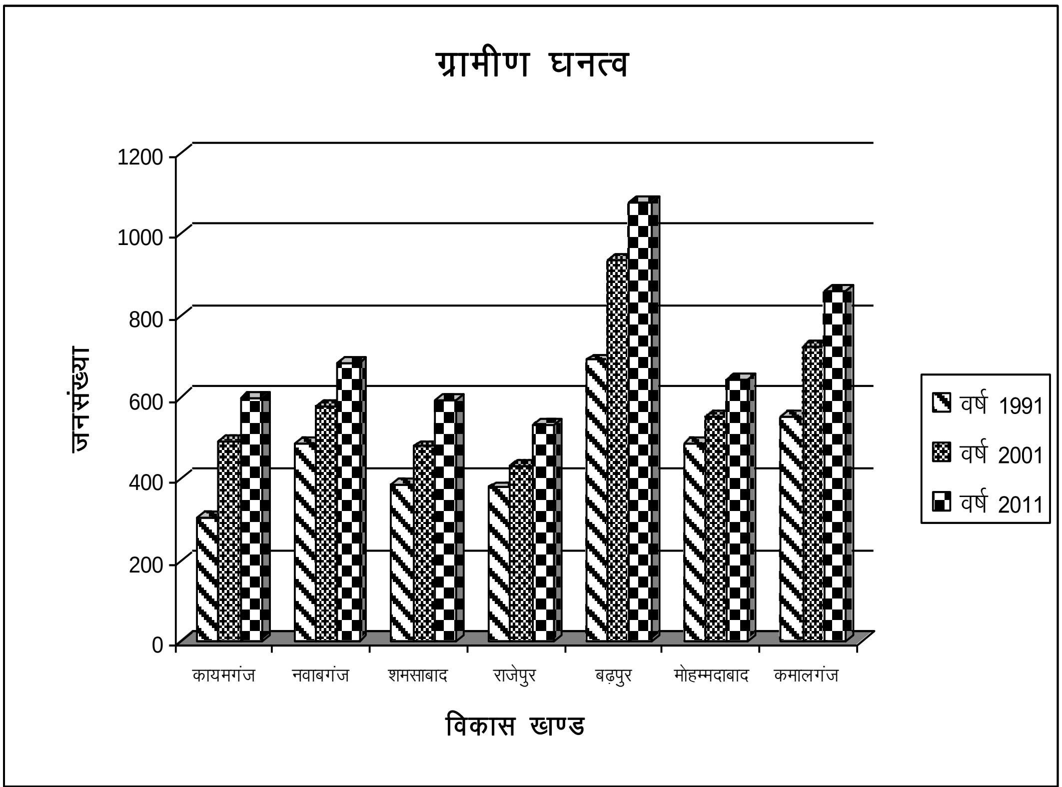

लिंगानुपात या यौन अनुपात

वर्ष 2011 में जनपद फर्रूखाबाद का ग्रामीण लिंगानुपात 874 तथा नगरीय लिंगानुपात 884 था जब देश का लिंगानुपात 940 तथा उत्तर प्रदेश का लिंगानुपात 912 था अब उपरोक्त लिंगानुपातों को देखा जाय तो ज्ञात होता है कि जनपद फर्रूखाबाद का लिंगानुपात देश और उत्तर प्रदेश दोनों से बहुत कम है। कारण ऊपर पैरा में स्पष्ट है। यदि जनपद फर्रूखाबाद पिछले तीन दशकों के लिंगानुपातों को देखें तो धीरे–धीरे कैसे लिंगानुपात बढ़ रहा है। वर्ष 2011 में लिंगानुपात 874 था जो कि वर्ष 2001 में 848 तथा वर्ष 1991 में 832 था। वर्ष 1991 से 2011 तथा लिंगानुपात पर प्रति 1000 पुरूषों पर बढ़ा है। ध्यान देने योग्य तथ्य है लिंगानुपात घटता हुआ खतरनाक होता यद्यपि यहाँ पर तीन दशकों में लिंगानुपात पर महिलाएं प्रति 1000 पुरूषों पर बढ़ी है परन्तु तीन का औसत 14 है।

लिंगानुपात या यौन अनुपात

विश्व के विभिन्न समुदायों में लिंग संरचना (पुरूष तथा महिलाओं की संख्या) में पर्याप्त अन्तर देखने को मिलता है। किसी जनसंख्या की लिंग संरचना के आंकिक प्रदर्शन के लिए लिंगानुपात सर्वाधिक प्रयुक्त विधि हे। लिंगानुपात को मुख्यतः पुरूष–महिला अनुपात में प्रदर्शित किया जाता है। इन अनुपात की गणना भिन्न–भिन्न देशों में अलग अलग प्रकार से की जाती है। भारत में लिंगानुपात को प्रति 1000 पुरूषों पर महिलाओं की संख्या के रूप में व्यक्त किया जाता है जिसे सूत्र में निम्न प्रकार प्रदर्शित करते हैं।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

$$\frac{Pf}{Pm} \times 1000$$

इसके अन्तर्गत

Pf - कुल महिलाओं की संख्या।

Pm - कुल पुरूषों की संख्या।

$$\text{लिंगानुपात} = \frac{\text{महिलाओं की कुल संख्या}}{\text{पुरूषो की कुल संख्या}} \times 1000$$

जनपद बदायूँ में लिंगानुपात प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या वर्ष 2001 (मार्च 2001 की जनगणना के आधार पर) में 840 है।

उल्लेखनीय है कि 2001 में उत्तर प्रदेश का लिंगानुपात 898 है। जनपद बदायूँ का लिंगानुपात प्रदेश से कम तथा मण्डल से अधिक हे। जिससे निम्नलिखित तथ्य सामने आते हैं।

1. जनपद फर्रूखाबाद में श्रमिकों की मण्डल की अपेक्षा आपूर्ति अधिक रहती है क्योंकि यदि समुदाय में महिलाओं की अपेक्षा पुरूषों की संख्या अधिक है तो उस क्षेत्र से श्रमिकों की आपर्ति अपेक्षाकृत अधिक रहती है।
2. जब प्रदेश अथवा क्षेत्र में पुरूषों की संख्या महिलाओं से अधिक होती है इसका प्रमुख कारण यह है कि महिलाओं की मृत्यु दर पुरूषों की तुलना में सामान्यतया कम होती है। स्पष्ट है कि जनपद फर्रूखाबाद में महिलाओं की मृत्यु दर पुरूषों की अपेक्षा कम है।
3. जिन समुदायों अथवा प्रदेशों में महिलाओं की संख्या पुरूषों की तुलना में काफी कम होती है। उनमें सामाजिक एवं नैतिक बुराइयां (जैसे वैश्यावृति, व्यभिचार, बलात्कार तथा चारित्रिक पतन) स्वतः बढ़ जाते हैं। यह नैतिक बुराइयाँ समाज में अनेक यौन रोगों (जैसे सिफलिस, गनोरिया, एड्स) को बढ़ावा देते हैं जनपद फर्रूखाबाद में लिंगानुपात कम है जिससे स्पष्ट है इन सब सामाजिक बुराइयों का अनुमान लगाया जा सकता है।
4. किसी समुदाय में पुरूषों की तुलना में महिलाओं की संख्या यदि कम होती हे तो सामान्यता अधिक उम्र के पुरूष अपने से कम उम्र की महिलाओं से शादी करते हैं। जिससे उस समुदाय में विधवा महिलाओं की संख्या अपेक्षाकृत अन्य समुदायों से अधिक मिलती है। जनपद फर्रूखाबाद में इस तरह की कृतियाँ अधिक देखने को मिलती है। लिंगानुपात कम होने के कारण अधिक उक्त के पुरूषों के साथ कम उम्र की महिलाओं की शादी करनी पड़ती है। ये कृतियाँ लिंगानुपात के अलावा बहुत कुछ आर्थिक स्थिति को दर्शाता है इस प्रकार समुदाय में विधवा महिलाओं की संख्या भी बढ़ जाती है।
5. महिलाओं की कम उम्र में शादी होने से प्रजननता दर बढ़ जाती है जिससे जनसंख्या में तीव्र वृद्धि अनुभव की जाती है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अर्थात् एक दशक में 14 महिलाएं प्रति 1000 पुरूर्षों अर्थात् एक साल में एक महिला प्रति 1000 पुरूष की वृद्धि इस वृद्धि ऋणात्मक वृद्धि कहा जायेगा। इसके कई कारण हो सकते हैं। ये वृद्धि काल्पनिक या केवल बढ़ा के दिखाई भी हो सकती है या फिर ये वृद्धि सामाजिक कुरीतियों का शिकार भी हो सकती है। ये वृद्धि इतनी ऋणात्मक है इसको राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शित करना व्यंग का पात्र बनना होगा। अब यदि हम ग्रामीण स्तर पर विकास खण्डों के अनुसार लिंगानुपातों की चर्चा करें तो वर्ष 2011 में सबसे अधिक लिंगानुपात कमालगंज विकास खण्ड में 902 महिलाएं प्रति 1000 पुरूषों पर है। इस विकास खण्ड में वर्ष 2001 में 869 तथा वर्ष 1991 में 849 लिंगानुपात था। विकास खण्ड मोहम्मदाबाद तथा शमसाबाद के लिंगानुपात 869 महिलायें प्रति 1000 पुरूष रहा है। सबसे कम लिंगानुपात विकास खण्ड 854 में था जबकि कायमगंज में 866, नवाबगंज में 861, राजेपुर में 854 तथा बढ़पुर में 856 लिंगानुपात अज्ञात हुआ है। कुल जनपदीय स्तर पर वर्ष 1991 में 832, वर्ष 2001 में 848 तथा 2011 में 874 लिंगानुपात महिलायें प्रति 1000 पुरूष रहा है।

इस प्रकार नगरीय लिंगानुपात पर प्रकाश डालें तो कुल नगरीय लिंगानुपात वर्ष 2011 में 884, वर्ष 2001 में 874 तथा वर्ष 1991 में 868 रहा है। वर्ष 1991 से 2011 तक जनपद फर्रूखाबाद में नगरीय स्तर पर लिंगानुपात में वृद्धि केवल 16 महिलायें प्रति 1000 पुरूषों पर हुई हैं। सबसे अधिक लिंगानुपात शम्साबाद (टी०ए०) में 903 तथा अमेठी (जदीद) में 900 तथा सबसे कम फतेहगढ़ छावनी में 619 थी, नगरी स्तर पर कैमगंज (एम०बी०) में 896, कमल्गंज (टी०ए०) 876, फर्रूखाबाद में 899, कम्पिल (टी०ए०) 877 तथा बरांव (सी०टी०) में 873 महिलाएँ प्रति 1000 पुरूषों यही क्रम वर्ष 1991 तथा 2001 में भी स्थापित रहा है। उपरोक्त आंकड़ों को देखकर कर ज्ञात होता है कि जनपद फर्रूखाबाद में समाज अनेक सामाजिक कुरीतियों से ग्रसित है। यदि समय रहते इस पर ध्यान नहीं दिया गया तो विकट समस्या उत्पन्न होगी।

तालिका–9 जनपद फर्रूखाबाद का नगरीय लिंगानुपात

नगर का नाम	**नगरीय लिंगानुपात**		
	वर्ष 1991	**वर्ष 2001**	**वर्ष 2011**
1. कैमगंज (एम०बी०)	897	879	896
2. शम्साबाद (टी०ए०)	890	893	903
3. कमल्गंज (टी०ए०)	893	839	876
4. फर्रूखाबाद (फतेहगढ़)	883	890	899
5. फर्रूखाबाद (छावनी)	622	663	619
6. कम्पिल (टी०ए०)	809	880	877
7. महोम्मादाबाद	871	868	864
8. अमेठी जदीद (सी०टी०)	--	--	900
9. बरांव (सी०टी०)	--	--	873
योग नगरीय	**868**	**874**	**884**

स्रोत : *सांख्यिकी पत्रिका–1991, 2001, 2011 के अनुसार।*

ग्राफ–7

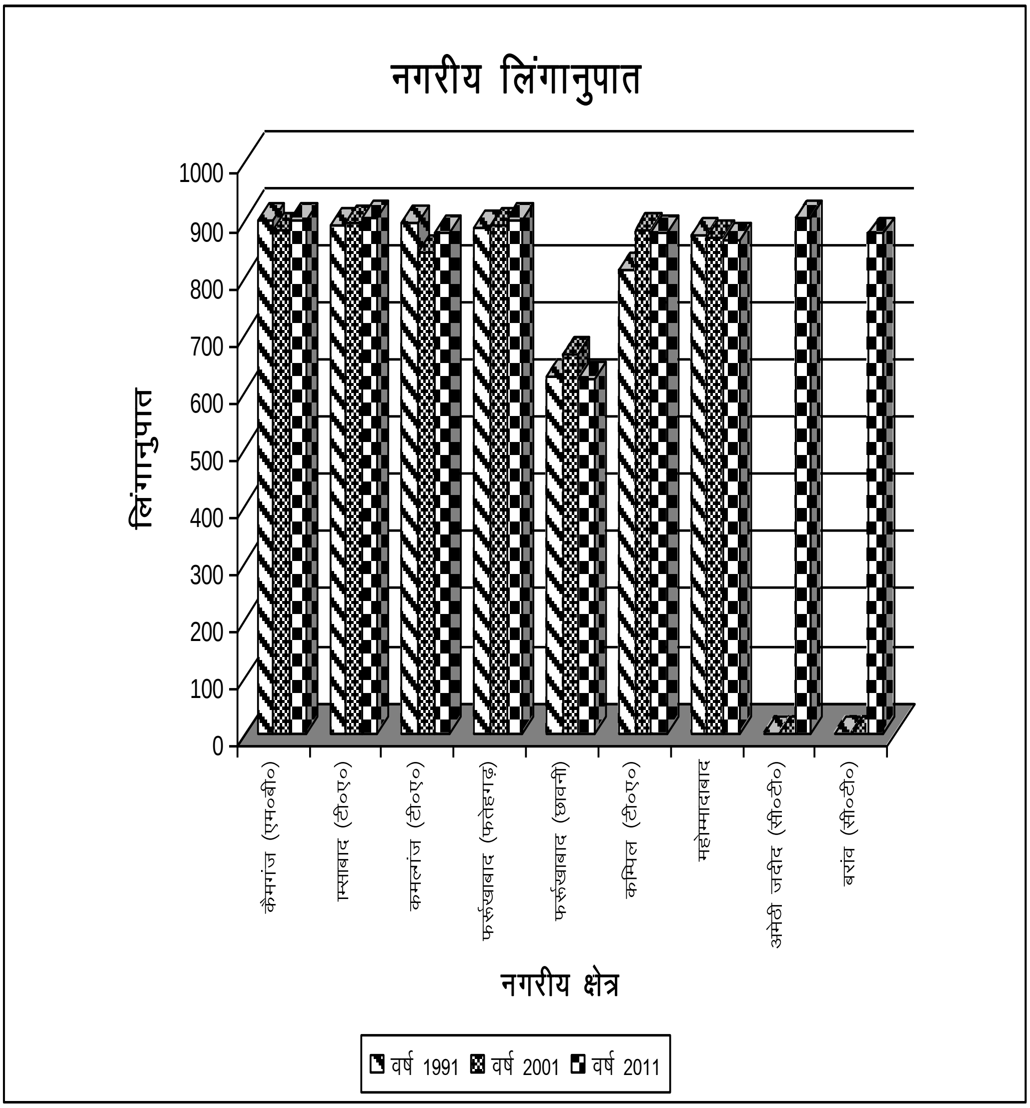

तालिका–10 जनपद फर्रूखाबाद में ग्रामीण लिंगानुपात

विकास खण्ड	**ग्रामीण लिंगानुपात**		
	वर्ष 1991	**वर्ष 2001**	**वर्ष 2011**
1. कायमगंज	811	828	866
2. नवाबगंज	827	838	861
3. शमसाबाद	812	847	869
4. राजेपुर	790	812	854
5. बढ़पुर	809	823	856
6. मोहम्मदाबाद	836	849	869
7. कमालगंज	849	869	902
योग ग्रामीण	**822**	**840**	**870**
योग शहरी	**868**	**874**	**889**
योग जनपद	**832**	**848**	**874**

स्रोत : *सांख्यिकी पत्रिका–1991, 2001, 2011 के अनुसार।*

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

ग्राफ–8

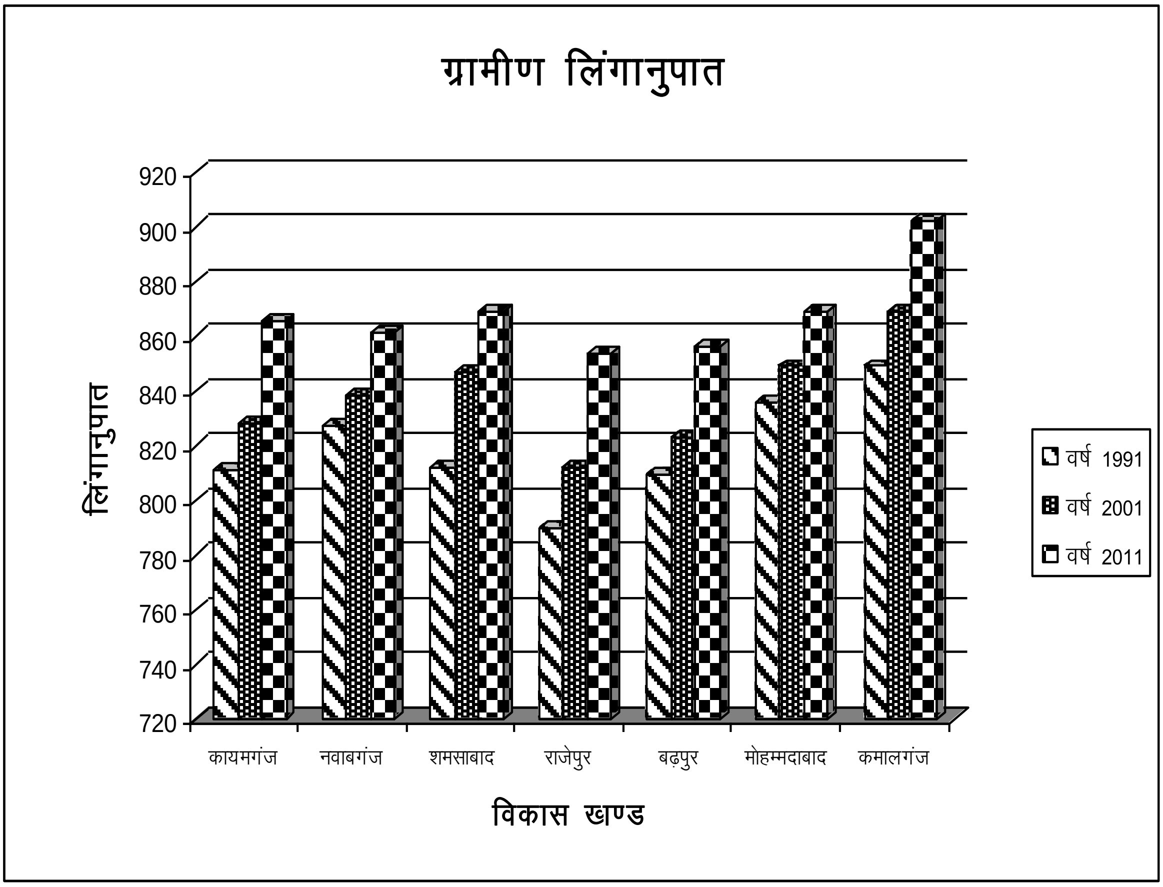

व्यवसायिक संरचना

किसी भी देश में जन–शक्ति संसाधन राष्ट्र की महत्वपूर्ण पूँजी होते हैं लेकिन यदि इन संसाधनों का समुचित उपयोग न किया गया तथा रोजगार के पर्याप्त अवसर प्रदान नहीं कराये जाते तो ऐसी जनशक्ति संसाधन उस राष्ट्र के लिये भार बन जाते है। इस दृष्टि से किसी देश में जनसंख्या की आर्थिक विशेषताओं का अध्ययन आवश्यक हो जाता है। किसी जनसंख्या की आर्थिक विशेषताओं के अध्ययन से जनसंख्या के उन आर्थिक जनांकिकी तथा सांस्कृतिक गुणों की जानकारी प्राप्त होती है जो उस देश के सामाजिक व आर्थिक विकास के लिये आधारभूत होते हैं।

किसी भी राष्ट्र अथवा प्रदेश या क्षेत्र की जनसंख्या को निम्न दो रूपों में बाँटा जा सकता है।

1. आर्थिक रूप से सक्रिय जनसंख्या

इस वर्ग में जनसंख्या का वह भाग सम्मिलित है जो शारीरिक तथा मानसिक दृष्टि से आर्थिक वस्तुओं के उत्पादन तथा सेवाओं में संलग्न मिलता है इस वर्ग में उन व्यक्तियों को भी सम्मिलित किया जाता है जो कार्य करने के अवसर ढूँढ रहे हो। इस वर्ग में मुख्य रूप से 15 से 60 वर्ष की आयु समूह के व्यक्तियों की प्रधानता मिलती है। इस वर्ग को कार्यशील आयु जनसंख्या या श्रम शक्ति भी कहा जाता है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

आर्थिक रूप से अकार्यशील जनसंख्या

इस वर्ग में जनसंख्या का वह भाग सम्मिलित है जो उत्पादन कार्यों में भागीदारी न कर रहा हो लेकिन गृह कार्य या शिक्षा प्राप्त कर रहा हो। अवकाश प्राप्त कर या पेन्शन या रायल्टी से प्राप्त आय पर जीवन व्यतीत करने वाले व्यक्ति भी इसी वर्ग में सम्मिलित है इस वर्ग में कैदी, किराया प्राप्त करने वाले, चोर, पाकेटमार, भिखारी आदि भी सम्मिलित किये जाते हैं।

आर्थिक रूप से सक्रिय जनसंख्या के मापन की विधियाँ

आर्थिक रूप से सक्रिय जनसंख्या के मापन की अग्र 6 विधियाँ हैं जिनका अध्ययन हम जनपद बदायूँ के सन्दर्भ में करेंगे।

1. अशोधित क्रियाशीलता दर
2. लिंग विशेष क्रियाशीलता दर
3. आयु विशेष क्रियाशीलता दर
4. निर्भरता अनुपात या निर्भरता दर
5. प्रतिस्थापन दर
6. रोजगार दर

1. अशोधित क्रियाशीलता दर

कुल जनसंख्या में क्रियाशील जनसंख्या का प्रतिशत अशोधित क्रियाशीलता दर कहलाती है। जनपद फर्रूखाबाद में 8 मार्च 2011 की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या 1885067 है इसको निम्न सूत्र द्वारा प्रदर्शित किया जाता है।

$$\text{अशोधित क्रियाशीलता दर} = \frac{\text{आर्थिक कार्यों में संलग्न जनसंख्या}}{\text{कुल जनसंख्या}}$$

जहाँ

आर्थिक कार्यों में संलग्न जनसंख्या = 976091

कुल जनसंख्या = 1885067

मान रखने पर = $\frac{976091}{1885067}\times 100$

अशोधित क्रियाशीलता दर 51.78 प्रतिशत

अशोधित क्रियाशीलता दर जनसंख्या की आयु संरचना से प्रमाणित होती है। साथ ही यह दर जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि तथा स्थानान्तरण के मापन का उपयुक्त आधार है।

2. लिंग विशेष क्रियाशीलता दर

जब अशोधित क्रियाशीलता दर की लिंग विशेष के लिये अलग–अलग गणना की जाती है तो वह लिंग विशेष की क्रियाशीलता दर कहलाती है इसको निम्न सूत्र द्वारा प्रदर्शित किया जाता है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

लिंग विशेष क्रियाशीलता दर = $\frac{\text{लिंग विशेष की कार्यशील जनसंख्या}}{\text{लिंग विशेष की कुल जनसंख्या}}$ x 100

3. आयु विशेष क्रियाशीलता दर

जब अशोधित क्रियाशीलता दर की विभिन्न आयु वर्गों के लिये अलग–अलग गणना की जाती है तो यह आयु विशेष क्रियाशीलता दर कहलाती है। इस दर की यौन विशेष के लिये भी गणना की जाती है।

4. निर्भरता अनुपात या निर्भरता दर

सामान्यता निर्भरता दर की गणना निम्न आयु वर्ग (अव्यस्क) तथा उच्च आयु वर्ग (वृद्ध) की सम्मिलित जनसंख्या में मध्यम आयु वर्ग व्यस्क से भाग देकर तथा भागफल को 100 से गुणा कर दी जाती है।

जनपद फर्रूखाबाद में निम्न आयु वर्ग की वर्ष 2011 में कुल जनसंख्या 302612 उच्च आयु वर्ग (वृद्ध) की कुल जनसंख्या 606358 तथा मध्यम आयु वर्ग (व्यस्क) की कुल जनसंख्या 976091 है।

सूत्रानुसार

= $\frac{\text{अव्यस्क वर्ग + व्यस्क वर्ग}}{\text{मध्यम आयु वर्ग}}$ x 100

मान रखने पर

$$= \frac{302612 + 606358}{976091} \times 100$$

जनपद फर्रूखाबाद में निर्भरता अनुपात या निर्भरता दर 93.0 प्रतिशत है।

5. प्रतिस्थापित दर

किसी दिये गये समय में किसी कार्यशील जनसंख्या में अतिरिक्त जुड़ने वाले व्यक्तियों की संख्या में से सेवानिवृत्त या मृत्यु के कारण कार्य छोड़ने वाले व्यक्तियों की संख्या को घटाकर प्रतिस्थापित दर प्राप्त की जाती है। इसे प्रतिशत में किसी विशिष्ट आयु वर्ग के लिये प्रदर्शित किया जाता है।

6. रोजगार दर

आर्थिक रूप से सक्रिय जनसंख्या में रोजगार युक्त अथवा बेरोजगार दोनों जनसंख्या सम्मिलित है।

जनपद फर्रूखाबाद में रोजगार युक्त जनसंख्या 709848 है जबकि जनसंख्या में रोजगार युक्त अथवा बेरोजगार दोनों की कुल जनसंख्या 1292937 है। इसे निम्न सूत्र द्वारा प्रदर्शित किया जाता है।

रोजगार दर = $\frac{\text{रोजगार युक्त जनसंख्या}}{\text{आर्थिक रूप से सक्रिय जनसंख्या}}$ x 100

मान रखने पर

$$\text{रोजगार दर} = \frac{709848}{1292937} \times 100$$

अतः रोजगार दर जनपद फर्रूखाबाद में 54.9 प्रतिशत है।

औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान

जनपद में एक औद्योगिक संस्थान है जो नगरीय क्षेत्र में स्थित है, जिसमें वर्ष 2000—2001 में विभिन्न ट्रेडों में सीटों की संख्या 124 थी, जिसमें राजकीय प्रावेधिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश द्वारा चयनित 99 अभ्यर्थियों द्वारा प्रशिक्षण हेतु विभिन्न ट्रेडों में नामांकन कराया गया।

मण्डल में आठ औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान कार्यरत हैं जिनमें 1999—2000 में सीटों की कुल संख्या 1756 लोगों ने नामांकन कराया जो मण्डल के कुल नामांकन का 7.4 प्रतिशत है।

प्रावैधिक शिक्षण संस्थान

जनपद में एक प्रावैधिक शिक्षण संस्थान नगरीय क्षेत्र फर्रूखाबाद में स्थित है। जिसमें डिप्लोमा स्तर पर शिक्षा दी जाती है तथा वर्ष 2000—2001 में विभिन्न ट्रेडों में सिटों की कुल संख्या 40 थी, जिसके विपरीत विभिन्न ट्रेडों में 40 अभ्यार्थियों का चयन कर प्रशिक्षण दिया जा रहा है जो मण्डल का 5.6 प्रतिशत है।

व्यवसायिक संरचना—श्रम एवं रोजगार

जनपद फर्रूखाबाद में 592267 अर्थात् 31.42 प्रतिशत लोग को रोजगार प्राप्त है परन्तु मुख्य रूप से 25.18 प्रतिशत को स्थाई तथा 68.58 अस्थाई रोजगार कुल जनसंख्या में प्राप्त है।

ग्रामीण स्तर पर 88.36 प्रतिशत महिलाओं को रोजगार प्राप्त नहीं हुआ है।

कुल रोजगार में से 41.38 प्रतिशत कृषि, 22.91 प्रतिशत कृषि श्रमिक, 7.35 प्रतिशत घरेलू उद्योगों और 28.36 प्रतिशत लोग अन्य रोजगारों में लगे हुए हैं। **सुझाव**

जनपद फर्रूखाबाद में जनसंख्या सम्बन्धी उपरोक्त समस्याओं के परिणामस्वरूप यहाँ की अधिकांश जनसंख्या निम्न जीवन स्तर पर अपना जीवन यापन कर रही हैं। इनके कारण अनेक सामाजिक एवं आर्थिक विषमताएं उत्पन्न हो रही हैं और जन समूह विशेषकर युवा वर्ग में असन्तोष उत्पन्न हो रहा है। जिसके परिणामस्वरूप जनपद में विभिन्न प्रकार के सामाजिक आर्थिक अपराधों, आन्दोलनों एवं हड़तालें हो रही हैं। पूर्व वर्णित सभी समस्याएँ प्रायः एक दूसरे की कारण व अनुपूरक तथा सहयोगी हैं, जिनके परिणामस्वरूप जनपद के कृषि विकास औद्योगिक विकास एवं जनसंख्या के जीवन स्तर में सुधार के लिये किये गये प्रयासों के आशानुकूल परिणाम सामने आ रहे हैं। अतः जनपद के बहु आयामी विकास की प्रक्रिया को तीव्रगति प्रदान करने के लिए इन समस्याओं का निराकरण होना नितान्त आवश्यक है जिनके लिए निम्नलिखित सुझावों पर अमल किया जा सकता है।

आर्थिक अवस्थापनाओं की समस्याओं का निराकरण

जनपद में सभी ग्रामों में विद्युतीकरण पूरा किया जाना चाहिए, शेष बचे 104 ग्राम (अभी तक यहाँ विद्युतीकरण नहीं हो सका है) में यथाशीघ्र कराया जाना चाहिए, जिससे विकास को गति मिल सके। जनपद की मुख्य सड़कों की निरन्तर मरम्मत सुनिश्चित कराई जाये तथा अब शेष ग्रामों से मुख्य सड़क तक सम्पर्क मार्ग बनवाये जायें।

जनसंख्या वृद्धि की समस्या का निराकरण

जनसंख्या वृद्धि के निराकरण के लिए निम्न उपाय किये जा सकते हैं।

अतः जनपद फर्रूखाबाद की समस्यायें अग्रलिखित हैं।

1. आर्थिक अवस्थापनाओं की समस्या।
2. जनसंख्या वृद्धि की समस्या।
3. अशिक्षा की समस्या।
4. बेरोजगारी की गम्भीर समस्या।
5. प्रवास की समस्या।
6. गरीबी एवं ऋण ग्रस्तता की समस्या।
7. कृषि व्यवसायों पर जनसंख्या का बढ़ता दबाव।
8. औद्योगिक विकास की समस्या।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

सांख्यिकीय पत्रिका वर्ष 2021, जनपद फर्रूखाबाद
सामाजिक आर्थिक समीक्षा वर्ष 2021, जनपद फर्रूखाबाद
डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, जनपद फर्रूखाबाद
जनसंख्या भूगोल–एच0एस0 गर्ग।
जनांकिकी एवं जनसंख्या अध्ययन–डॉ0 आर0डी0 त्रिपाठी।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies